कोदण्डराम करावलम्ब स्तोत्रम्
खर नाम संवत्सर माघ शुद्ध चतुर्दशि / पूर्णिम ७/६/२०१२

१. हे रामचन्द्र गगनाधिप वंशजात
श्री जानकीश सुमनोहर दिव्यगात्र
रुद्रादिदेवगणवन्दितपादपद्म
कोदण्डराम मम देहि करावलम्बम्

२. गाधेय सङ्कृत सुदीपितयागपूज्य
सीतामनोहर, सदाशिवचाप भङ्ग
राजाधिराज, जमदग्निज गर्व भङ्ग
कोदण्डराम मम देहि करावलम्बम्

३. पित्रानुमानस जटाधर चीरधारी
कान्तारवासित गुहादि निषाद मित्र
भ्रात्रा सुपालित पुरीम् तव पादुकाभ्याम्
कोदण्डराम मम देहि करावलम्बम्

४. वीराधिवीर वरलक्ष्मण सेवितान्घ्रे
घोरातिघोर खरदूषण प्राणहारि
सीतापहारसमये विजितः कुमायाः
कोदण्डराम मम देहि करावलम्बम्

५. पक्षीन्द्रमोक्षवरदायकदिव्यमूर्ते
किष्किन्धराजसुरराजसुतप्रहर्त्रे
आदित्यपुत्रहितवायुसुतार्चिताङ्घ्रे
कोदण्डराम मम देहि करावलम्बम्

६. कल्लोलपूरमहदर्णवशीघ्रलान्घ
लङ्कां प्रदग्धमनिलात्मजेन पूज्य
जानासि सुन्दर मुखस्य गजारि नादात्

कोदण्डराम मम देहि करावलम्बम्

७. निर्माय सेतुमतिचित्रमपूर्व शैल्याम्
आगत्य वानरगणादिसमेत लङ्काम्
हत्वा दशाननखलं जगदेकवीर
कोदण्डराम मम देहि करावलम्बम्

८. वाल्मीकि कोकिल सुगीत सुनाद पूर्णम्
षट्काण्ड पूर्वसुममाल सुनाम काव्यम्
तथ्यं तु सत्फलमिहं प्रददाति नित्यम्
कोदण्डराम मम देहि करावलम्बम्

९. ये मानवाः सुखमिदं निरतं पठन्ति
ते सर्वदा रघुवरस्य चित्ते वसन्ति
श्री राम राम रघुराम गुणाभिराम
कोदण्डराम मम देहि करावलम्बम्